सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 199

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 39
जुलाई – 2021

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

प.पू. ख्वाजा बंदेनवाज गुलबर्गा इनकी मुलाकात (दिनांक 14.11.1981)

गुरूबंधु भगिनियों

यहाँ जो तमाम मेरे प्यारे बंदे हाजिर है उनको हम इस साल के लिए मुबारक देते हैं। यहाँ आगेपीछे जो आदमी बैठे है इनमें कई आदमी काफी पुराने है और कोई नए आदमी भी है। इन दोनों में मुझे कोई फर्क नहीं लगता क्योंकि जो पुराने है वो भी नए है और जो नए है वो भी पुराने हैं। किस बात से? वे शायद आज नए है लेकिन अनेक जन्मों से वे मेरे भक्त है। आपको लगता है कि मैं 10 साल पहले आया हूँ और ये आज नया है लेकिन ये जो फर्क है वह आप लोगों में है, हममें नहीं है। इसलिए सबसे पहले ये तमाम आदमी जो मेरे भक्त है, मेरे बंदे है इनका मैं बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ। आज के दिन की खुशी यहाँ हम सब इकट्ठा मिलकर मनाने वाले हैं। क्या है यह खुशी की बात? इस खुशी की वजह क्या है? किस बात के लिए मुझे आज खुशी हुई है?क्या आपको मालूम है?

25 साल पहले जब इस कार्य का हमने आरंभ किया तब हम और हमारा बच्चा सिर्फ हम दोनों ही साथ में बैठकर बातें करते थे। उस वक्त हमारी तरफ से उठने वाली जुबान (आवाज) सिर्फ हमारा बच्चा सुनता था और बच्चे की जुबान सिर्फ हम सुनते थे। उस वक्त यह मामला (विषय) था कि दुनिया के अंदर जो कोई दुखी है जिनको अभी तक अपनी जिंदगी का कोई हवाला (सहारा) नहीं मिला है, उनको इस मासूम जिंदगी की मालूमात (पहचान) करके दें। जन्म मिलना या जन्म प्राप्त होना ये कोई मामूली चीज नहीं है। इस जिंदगी को प्राप्त करने के लिए आपको कितने तरह के एहसान लेने पड़ते है यह आपको नहीं पता इसलिए आप क्या करते है?आपकी जिंदगी के अंदर हर दिन जो बीतता है उसका ख्याल आप बहुत थोड़ा करते है। आपको जो जिंदगी मिली है वह बड़ी मुश्किल से मिली है, उसका लाभ कैसे उठाना है?इसके बारे में आप सोच सकते हैं।

आपको खुदा मालिक की दुआ से यह जो तोहफा मिला है उसकी परवरिश करना आपका फर्ज है। इसके बारे में ना सोचते हुए आप यह समझते है कि बस ऐसे कुछ ख्याल थे और ऐसी कुछ खुशियाँ पैदा हुई जिनकी वजह से आप दुनिया के अंदर पैदा हो गए लेकिन इस कुदरत की जमीन पर कदम लगना इसके लिए सैंकड़ों साल लगते है। फिर भी आज आप जिंदगी गुजारते वक्त कोई ख्याल ना करते हुए अपनी जिंदगी को बेचते है। आज आपके हाथों से कोई अच्छा काम भी होता है और कोई बुरा भी होता है। हम लोगों की तरफ से आपको इस जिंदगी का

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

ज्ञान होने के बाद आपको लगता है (एहसास होता है) कि आज दिन तक मैंने ये जिंदगी नाहक बिताई है, इसके आगे मेरे लिए या दुनियावालों के लिए मैं कोई अच्छा काम कर लूँ क्योंकि इस जन्म की प्राप्ति का इंतजार करते–करते कई सैंकड़ों साल गुजर गए और मुझे उसके इंतजार में बैठना पड़ा है। इतनी मुश्किल से प्राप्त होने वाली ये जिंदगी है। इसको कामयाब करें, आबाद करें और इस जिंदगी के अंदर मालिक के नाम की आवाज उठा दे इस तमन्ना से 25 सालों से हम और हमारा बेटा बैठे है और हम दोनों में बातें होती थीं।

तू मेरे सामने बैठा तुम है और तू भी मेरा बंदा है। शायद भगवान तुम्हें ऐसा मौका कभी देते और तुम्हें ये पता चलता कि और भगवान बातें कर रहे हैं जिसका पता दुनिया को नहीं लग रहा है तब तू मालिक से कहता, ''मैं जिस जमीन पर खड़ा हूँ उस जमीन को सोने की कर दो।'' मतलब जब कभी ऐसा मौका आप लोगों को मिल जाता तब आप दुनिया के लिए नहीं मांगते, आप सिर्फ खुद के लिए ही मांगते लेकिन हमारे बेटे ने हम लोगों से क्या मांगा? ये तमाम दुनिया मिट्टी की है, हर इन्सान गुजरने के बाद इस मिट्टी में ही मिल जाता है। इस मिट्टी का खुदा बनाना है और इसमें खुदा की रहमत को मिलाना है।

ऐसा क्यों? आगे आप लोगों के जीवन में बहुत मुश्किलें है। आज तक के दिन जिस तरह से गुजरे है उस तरह के दिन आप लोगों को फिर से मिलने वाले नहीं है और आपके बाल–बच्चे इन दिनों के बारे में सोच भी नहीं सकते इतनी बरबादी है! आगे आने वाले जमाने में इस बरबादी को किसी कारण से रोकना यह हर शख्स का फर्ज है और इसी इल्तजा से हम लोगों ने आपस में यह बात पक्की (निश्चित) की। आगे के जमाने के अंदर इन्सान को जिंदगी गुजारने के लिए कोई आसरा नहीं होगा कोई रास्ता नहीं होगा किसी की दुआ नहीं होगी। ऐसे हालात में इन्सान अपनी जिंदगी कैसे गुजारेगा?यह बात ख्याल में लेने के बाद हम लोगों ने इस कार्य का आरंभ किया और इसमें आप अपनी जिंदगी आबाद करने के लिए चले आए।

यह आबादी का कार्य करते–करते इस विजयादशमी को 25 साल हो गए। इन 25 सालों में हमने दुनिया को आबाद करने का सबक सिखाया और इस दुनिया को कारणदीक्षा के रूप में दुआ दी। आपने भी उसको लिया है, आपने भी उसको पाया है। हम यह नहीं कहना चाहते और इस तरह का नाज हम अपनी जिंदगी में नहीं पैदा करना चाहते कि, ''यह हमने ही किया है।'' इस जमाने में आप हम लोगों के साथी ना बनते तो हम क्या कर सकते थे? इसलिए ''हमने ये किया'' यह कहना भी गलत है क्योंकि ये आप लोगों ने ही किया है। आपने हमारा साथ दिया इसलिए हमें बहुत हमदर्दी है। ये 25 सालों तक का जमाना (समय) है उसमें भगवान भक्ति का रास्ता जो है वह इन्सान की जिंदगी में आबादी का कारण बनाने की सीख देने का काम हम लोगों की तरफ से आपने किया इसके लिए यहाँ जो तमाम भक्तभाविक मौजूद है उनका बहुत–बहुत शुक्रिया!

आप लोग कहेंगे कि मालिक लोग हमारा शुक्रिया अदा करते है लेकिन इसी से आप भी यह सीख जाओ बच्चे लोग क्योंकि आप लोगों पर भी कई तरह के एहसान होते रहते है। एहसान के बगैर ये जिंदगी गुजरती नहीं है लेकिन आप इन्सानों की आदत ही ऐसी है कि आप पर जो एहसान करता है उसको आप आसानी से भूल जाते है। आपको किसी के घर जाना है और आप गलत रास्ते पर आ गए। तब किसी अन्य आदमी को आप पता पूछते है। वह रास्ता बताता है आप उचित स्थान पर पहुँचते है लेकिन आप उस शख्स का शुक्रिया अदा करना भूल जाते है। आप इन्सानों की आदत ही ऐसी है। जिस इन्सान की जिंदगी शैतान बनी है उसके मुँह से 'शुक्रिया' ये लफ्ज़ निकल ही नहीं सकते लेकिन जो खुदा का बंदा है वही इन्सान है और वही अपने मुँह से शुक्रिया ये लफ्ज़ कहेगा।

इन 25 सालों में आप लोगों की मदद से इस दुनिया में अपनी जिंदगी किस तरह से गुजारने से आप सुख, शांति, धन–दौलत, आबरु, इज्जत प्राप्त कर सकते है इसका बिल्कुल सही रास्ता हमने इन्सान को दिखाया है। सुख, शांति, धन–दौलत, आबरु, इज्जत ये सब पाने के लिए इस दुनिया के अंदर का रास्ता बहुत मुश्किल है क्योंकि यह सब प्राप्त करने के लिए आपको प्राप्त हुई जिंदगी बहुत थोड़ी(कम) है इसलिए आपकी मुश्किल जिंदगी बिल्कुल आसान रास्ते से गुजरने के लिए आपको आज दिन तक हमने सीख दी है।

आज दिन तक जो 4 सम्मेलन हुए है उनमें आपको प्राप्त हुई जिंदगी क्या चीज है और आप उस चीज का इस्तेमाल खुद के लिए और दुनिया वालों के लिए किस तरह से कर सकते हैं यह हम आपको सिखाते आए है। अभी ये पाँचवां सम्मेलन है। बहुत शुक्रिया है आप लोगों का कि आज इस पाँचवें सम्मेलन में आप हाजिर हो गए है। इसका लाभ आप किस तरह से लेने वाले हैं ये आप जानते है और खुदा मालिक जानते है, मैं तो नहीं जानता। मेरा काम सिर्फ इतना है कि आप मेरे बंदे हैं और आपको पूरी तरह से खुदा का बंदा करके इस दुनिया के अंदर छोड़ देना है। किसलिए? मस्ती

करने के लिए नहीं तो यह दुनिया जो सुस्ती में है उसे मस्ती में लाने के लिए यानी उसे होश में लाने के लिए।

आज के दिन तक यानी 25 सालों तक हम लोगों का लाभ आपने सिर्फ अपने सुख, दुख के लिए उठाया इसका अफसोस जरूर है लेकिन अफसोस किस बात का है?हमारे पास कुछ और देने की ताकत थी और आपने लिया कुछ और इस बात का अफसोस है। मतलब आपने हमें सुख क्यों मांगा इसके लिए हम नहीं रोते, हम इसलिए रोते है कि हमारे पास से लेने के लिए कुछ और भी हमारे पास मौजूद है इसका पता ही आपको नहीं लग रहा है। आप सिर्फ इतना समझ गए है कि इनके पास पहुँचने से हमारा दुख दूर हो सकता है। आपका दुख दूर करना ये तो मामूली चीज है हमारे लिए लेकिन दुख है या नहीं है?सुख है या नहीं है?ये दुख–सुख क्या है? क्या दुनिया में असली में दुख है?दुनिया में दुख है ही नहीं। दुख मतलब आपका अज्ञान है। आपका अज्ञान जो है वही दुख है भाई! एक दफा जिंदगी का कारण आप समझ जाएंगे तो दुख है ही नहीं और सुख भी नहीं है। मालिक ही मालिक है सब तरफ और उनकी ही पुकार होती है।

जिसका नाम रौशन होता है उसकी पुकार होती है। आपने मुझे कब पुकारा है? आपके दिल में कुछ ठेस पहुँचती है (तकलीफ होती है) तो पुकार उठती है, "अल्लाह!" लेकिन दुआ लेने के लिए आपने मुझे कब पुकारा है? आप कहते है कि आपने मुझे पुकारा है और मैंने नहीं सुना मतलब मैं कितना बेहोश हूँ? लेकिन अरे, जब मैं होश में होता हूँ उस वक्त तुम बेहोश होते हो। मेरे लिए पुकार करने के लिए फुरसत ही कहाँ है आपको? जिंदगी में जब दिन होता है तब आप संसार की बेहोशी में होते है और जब रात होती है तब आप नींद की बेहोशी में होते है। फिर मेरे लिए पुकार करने के लिए समय कब मिला है आपको?आज दिन तक आपने सच नहीं कहा है लेकिन कम से कम आज मेरे साथ बात करते समय तो सच कहो।

आज तक आप जो मांगते थे वह हम देते थे लेकिन आप जो सुख मांग रहे है यह कितनी बड़ी गलती जिंदगी में कर रहे है क्या यह आप समझ गए हैं? ये बात हमने आपको पहले बताई नहीं लेकिन आपने मांगा हुआ सुख आपको देते–देते हमने उसके साथ आपको गुरुकृपाशीर्वाद की प्राप्ति भी कराई है और उसकी दुआ भी आपकी जिंदगी के अंदर जोड़ते–जोड़ते आपको 'कारणदीक्षा' तक पहुँचाया है।

बेटा, कारणदीक्षा कभी आपने अपने मुँह से मांगी नहीं थी, उस कारणदीक्षा तक आपका हाथ भी पहुँचना मुश्किल है लेकिन अब आपका पूरा देह और पूरी जिंदगी वहाँ तक पहुँच गई है। कारणदीक्षा का नाम सुनकर अगर आप वहाँ तक पहुँचने की कोशिश करोगे तो आपका हाथ भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकता। हमने वहाँ तक किसको पहुँचा दिया है? केवल आपको अकेले को ही नहीं पहुँचाया है। आप जिस परिवार के अंदर पैदा हुए है उस परिवार का एक घटक किसी कारण से हम लोगों के पास आकर पहुँचा है उस आदमी को और उसके पूरे खानदान को हमने कारणदीक्षा के अंदर डूबा दिया है। इससे बड़ी रहमत करने वाला कोई खुदा इस दुनिया में पैदा नहीं हुआ है और आगे भी नहीं होगा। ये सब कार्य करना किसी इन्सान की ताकत नहीं है। लेकिन भाई, क्या यहाँ तक आने के बाद आपके जिंदगी की कामयाबी हो गई है?ये सब जो हमने आपके लिए किया है क्या उससे आपकी जिंदगी की इल्तिजा पूरी हुई है?तो नहीं। फिर अब क्या है? ये सब जो ना मांगते हुए आपको मिला है वह आपको अपने लिए मिला है। अब आपने वह दूसरों को उसी तरह से देना है जिस प्रकार से हमने आपको दिया है। हमने आपको ये सब देते वक्त आपने पाप किया है या पुण्य किया है, आप गरीब है या रईस है?आपकी जाति, धर्म कुछ भी नहीं देखा। फिर हमने क्या देखा? तो सामने आया हुआ यह इन्सान है और उसकी जिंदगी में इन्सानियत पैदा करनी है सिर्फ इतनी तमन्ना हमने रखी आपको ये सब प्राप्त कराने के लिए हमने आपको कोई प्रखर जाप, तप, साधन करने के लिए नहीं बताया। इतने ये एहसान हैं!

आप इसके पहले पाठशाला में गए है, विश्वविद्यालय में भी गए है। वहाँ पढ़ाई होने के बाद आपको यह पता चलता है कि, "मैंने ये जो पढ़ाई की है उसके लिए मैंने कितनी मेहनत की है" लेकिन उतनी भी मेहनत आपको कारणदीक्षा तक आने में नहीं हुई है ये कितनी अजीब बात है! आपने ना मांगते हुए भी परवरदिगार ने आप पर ऐसा यह एहसान किया है। आपने उसे आसानी से भूलना नहीं चाहिए। उसका लाभ आपने तमाम दुनिया को देना है। आपको ये चीज बिना मेहनत के मिली है। उसी तरह दूसरों को देते समय आपकी तरफ से उन्हें कोई भी तकलीफ नहीं होनी चाहिए। क्या आप समझ गए हैं? अरे, हम जब आपकी परेशानी दूर करते थे तब हम कहते थे, "भाई, 30 पैसा दान कर दो", आगे के जमाने में अगर आपने कहा, "30 रुपया दान करो और वो मुझे ही लाकर दो" तो ये बड़ा मुश्किल काम हुआ। जिस गुरु ने 30 पैसे के अंदर आपकी जिंदगी सोने की कर दी वह सोना बना हुआ गुरु की औलाद, यह कहता है "30 रुपया दान करो और मेरे ही हाथों में दो", तो ये 'महाकारण अवस्था' नहीं है।

महाकारण अवस्था के अंदर मजा कैसा है? आपको पहले 5 हफ्तों के लिए 30 पैसा दान करने के लिए कहा था।

उस समय हर हफ्ता आप 30 पैसा दान देते थे और अब महाकारण अवस्था के अंदर 5 हफ्तों के लिए सिर्फ 30 पैसा दान है। कितनी आसान हो गई है बात, एक हफ्ते के लिए सिर्फ 6 पैसा दान है!

महाकारण अवस्था की दीक्षा है ॐकार दीक्षा। वो आप पहले ले चुके है लेकिन जिस तरह आपकी अवस्था बदलती है वैसे ॐकार भी अपनी अवस्था बदलता है। जैसे आपकी अवस्था बदलती जाती है वैसे ॐकार की अवस्था बदलती है और ॐकार की उस बदलती अवस्था से आपकी अवस्था बदलती है यानी आपकी देहिक और आत्मिक अवस्था जिस तरह से बदलती जाती है वैसे ॐकार भी अपनी अवस्था बदलता है। साधन वही है। आप पहली बार आए थे और ॐकार करते थे। उस वक्त उस ॐकार के अंदर से उठने वाली आवाज आपके लिए कितने काम की थी? उस समय आपको भगवान का नाम सुनने में दिलचस्पी नहीं थी, आपके कानों को वह आदत नहीं थी। फिर भी आपने ॐSSS इतना कहने से वह आपके कानों को सुनाई दिया और आपके कान जाग गए इस तरह होते–होते आपका दिल जाग गया और इस तरह यह ॐकार लंबा होता गया मतलब ॐकार का कार्य बदलता गया, बढ़ता गया। अभी आपके कान जगह पर आए है, आपका दिल अपनी जगह पर आया है और जिस इन्सान के अंदर दिल है वो इन्सान भी अपनी जगह पर आया है। अब उस इन्सान को आसमान पर चढ़ना है तो उसके लिए आपका यह ॐकार भी आसमान की लकीर तक पहुँचना चाहिए मतलब ॐकार को अपनी अवस्था बदलनी पड़ती है या नहीं?पहला ॐकार जो 5 साल पहले आपको सिखाया था –ॐSSSS, ॐSSS वह ये काम नहीं करेगा। आपके गुरु वं. दादाजी की तरफ से आपको ये मालूमात (जानकारी) काफी तरह से समय के अनुसार से होती गई है। अब जो लाभ आप लेकर जाएंगे उसके साथ हम लोगों की दुआ भी आपके साथ रहेगी। जिस तमन्ना से हमने 25 साल पहले आगे के जमाने के लिए इस कार्य का आरंभ किया था उस आगे के जमाने में आप भी है और आपके बाल–बच्चे भी है। उनको भी अपनी जिंदगी के अंदर सुख–दुख का सामना तो करना ही है। भगवान को भी दुख ने नहीं छोड़ा फिर आप सब तो इन्सान है आपको भला दुख क्यों छोड़ेगा?

आपको अगर पूरी तरह से सुखी बनाया तो क्या होगा? आप दुख की वजह से यहाँ मेरे पास पहुँचे है, नहीं तो आप डाकखाने के उस लिफाफे की तरह आते जो 30 पैसों का होता है। आप मतलब लिफाफे में खत लिखकर भेजते और कहते, "मैं आया था मिलने लिफाफे से" आप खुद नहीं आते। इसलिए थोड़ा दुख तो रखना ही पड़ता है। थोड़ा मर्ज नहीं रखा तो मरीज जगह पर नहीं रहता इसलिए उतनी तो कसर (कमी) रखनी ही पड़ती है। ठीक कहा है ना? थोड़ी कमी नहीं रखी तो आप वापस यहाँ नहीं आओगे इसलिए पूरा देना ही नहीं है। वैसे आप हमारी झोली में आए है लेकिन आपको पूरा खुदा का बंदा नहीं करना हैं। थोड़ी निशानी (कमी) रखनी चाहिए तब दुनिया वाले कहेंगे, "इसमें ये क्या नकली नजर आ रहा है?ये पूरा खुदा क्यों नहीं नजर आ रहा है?" कम से कम यह पूछने के लिए तो आप हमारे पास आओगे ही। भक्तों की हँसीये हमारी आदत है पुराने जमाने से, इसका कोई इलाज नहीं है।

आज शाम से आगे का जो कार्यक्रम है उसका लाभ आप पूरी तरह से उठाईये। फिर एक बार आप तमाम आदमियों का शुक्रिया अदा करता हूँ। यह इसलिए कि इस कार्य को आगे के जमाने तक पहुँचाने के लिए जो मेहनत करनी है उसके लिए हम मजबूर नहीं है लेकिन जिस ताकत को हम दुनिया के दारोदिवार तक पहुँचाना चाहते है उस ताकत का तोहफा पहुँचाने की तकलीफ आपको उठानी है। बाकी की तकलीफ हम उठाएंगे।

बस, इन्शाअल्लाह! अब इजाजत चाहते है। तमाम आदमियों को ये नया साल मुबारक हो और आपकी जिंदगी पूरी तरह से सुख–शांति, धन–दौलत, आबरु–इज्ज़त से भरी रहे। मैंने आप तमाम लोगों को जो अर्ज करना था वो आपके सामने पेश किया है। क्या वो मंजूर हुआ?सबने कहा, "मंजूर हुआ।"

एक गुरुबंधु – मंजूरी का सवाल ही कहाँ है बाबा, मंजूर तो है ही।

प.पू. बाबा – मैं कहता हूँ, जमाना जैसे बदलता है वैसे भगवान भी बदल जाते है। तुमने यह गीता में नहीं पढ़ा होगा कि भगवान भी बदलते है।

गुरुबंधु – मैं कुछ अर्ज करुँ? कहते है कि जमाना अक्सर रंग बदलता है मगर हम ऐसे रंग में रंगे हुए है जो रंग बदले नहीं है।

प.पू. बाबा – नहीं, नहीं, आप ऐसे रंग में रंगे हुए है कि आप वो रंग बताते नहीं है। यह थोड़ा–सा फर्क है। भक्तों की हँसी देखो, मेरी शिकायत आपसे नहीं है, मेरी शिकायत आपकी जिंदगी से है। मुझे ये मालूम है कि मैं खुदा का बंदा हूँ और मेरे हाथों में इतनी ताकत है कि मैं मरा हुआ मुर्दा भी जिंदा कर सकता हूँ। फिर आप तो जिंदा है लेकिन मरे हुए जैसे है तो क्या मैं आपको जिंदा नहीं कर सकता?

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।